66

यीशु की मृत्यु और रोमी पेशियां

(27:1-31)

अध्याय 27 की अधिकतर घटनाएं दुख भोगने के सप्ताह वाले शुक्रवार को घटीं। उस दिन सुबह-सुबह यहूदी सभा ने औपचारिक रूप में यीशु को दण्ड देने और यीशु की मृत्यु दण्ड का केस बनाने के लिए सभा की, ताकि वे उसे पिलातुस के सामने पेश कर सकें (27:1, 2)। जिस कारण यीशु को पकड़वाने के लिए यहूदा खेद से भर गया। उसने लहू का दाम यहूदी अगुओं को लौटा दिया और फिर सांसारिक शोक से भरकर बाहर जाकर फंदा लगा लिया (27:3-10)।

यहूदियों को मृत्यु दण्ड देने का अधिकार नहीं था इस कारण उन्होंने यीशु को यहूदिया के रोमी हाकिम पिलातुस के पास भेज दिया। उसे चाहे यीशु को मृत्यु का दण्ड देने की कोई बात नज़र नहीं आई पर यहूदी अगुओं ने भीड़ को यह ज़ोर देने के लिए भड़का दिया कि उसे मृत्यु दी जाए। अन्त में पिलातुस ने उसकी इच्छा के आगे घुटने टेक दिए। जैसा कि पारम्परिक रूप में होता था उसने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले यीशु को बुरी तरह पिटवाया (27:11-26)।

रोमी सिपाही क्रूरतापूर्वक यीशु को राजा की तरह वस्त्र पहनाकर और उसके प्रति श्रद्धा व्यक्त करने का दिखावा प्रगट करते हुए ठट्ठा कर रहे थे। कोड़े मारने के बाद वे उसे क्रूस पर चढ़ाए जाने की जगह ले गए (27:27-32)।

सभा का दण्ड
(27:1, 2)

[1]जब भोर हुई, तो सब महायाजकों और लोगों के पुरनियों ने यीशु के मार डालने की सम्मति की। [2]और उन्होंने उसे बान्धा और ले जाकर पिलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया।

आयतें 1, 2. रात को प्रधान याजक और महासभा के जितने सदस्यों को इकट्ठे लाया जा सकता था उनके द्वारा यीशु की पेशी हुई थी। निर्णय चाहे किया जा चुका था कि यीशु परमेश्वर की निंदा करने का दोषी है और मार डाले जाने के योग्य है (26:66) पर रात को ऐसा फैसला लेना व्यवस्था के विरुद्ध था (26:57 पर टिप्पणियां देखें)। इसलिए अपने फैसले को वैध दिखाने के लिए सारी सभा (**सब महायाजक और लोगों के पुरनियों**) सभा के कक्ष में भोर से पहले इकट्ठा हुए (मरकुस 15:1; लूका 22:66)। इस इकट्ठा होने का उद्देश्य केवल अपनी कार्यवाहियों को कुछ हद तक वैध दिखाना और अपने फैसले को लागू करवाने के लिए पिलातुस को विश्वास दिलाने के लिए योजना बनाना था। सभा के लिए जल्दी-जल्दी काम करना आवश्यक था क्योंकि रोमी हाकिम आम तौर पर सरकारी कामकाज सुबह-सुबह ही निपटा लेते थे।[1] इस समय यहूदी

लोग प्रार्थना में लगे होने थे इस कारण यीशु की हत्या करने की महासभा की इच्छा में इन लोगों से इनकी प्रार्थनाएं छीन लीं या कम से कम उनकी प्रार्थना में से धर्म की बात छीन ली।[4]

महासभा द्वारा यीशु को आधिकारिक रूप में दोषी ठहराए जाने के बाद **उसे बांधा** गया। उन्होंने उसे ले **जाकर पिलातुस हाकिम के हाथ में सौंप दिया**। इन सभी कामों से 20:18, 19 में यीशु की भविष्यवाणी पूरी हुई कि वह ''प्रधान याजकों और शास्त्रियों के हाथ पकड़वाया'' जाना था, जिन्होंने ''उस को घात के योग्य'' ठहराना था, और फिर ''उस को अन्यजातियों के हाथ सौपेंगे'' देना था।

पिलातुस यहूदिया के ऊपर रोमी हाकिम यानी गवर्नर[3] था। हेरोदेस महान के मरने के बाद (4 ई.पू.), यह इलाका रोमी सरकार द्वारा उसके पुत्र अरखिलाउस को सौंप दिया गया था (2:19-22)। परन्तु बाद में अरखिलाउस को पद से उतार दिया गया (ईस्वी 6) और रोमियों ने उस इलाके पर शासन करने के लिए एक के बाद एक हाकिम नियुक्त किए। इनमें से चार अधिकारी बीस वर्ष के काल में पिलातुस से पहले आए थे। पिलातुस ने स्वयं दस साल तक शासन किया (ईस्वी 26-36)।

नये नियम में पिलातुस का उल्लेख कई बार मिलता है। कुछ प्राचीन हस्तलेखों में उसे आयत 2 की तरह ''पुन्तियुस पिलातुस'' कहा गया है (देखें KJV)।[4] पारिवारिक नाम ''पुन्तियुस'' लूका 3:1; प्रेरितों 4:27; 1 तीमुथियुस 6:13 में मिलता है। जोसेफ और अन्य प्राचीन इतिहासकारों के द्वारा भी पिलातुस का उल्लेख किया गया है।[5] उनकी गवाहियों के आधार पर पिलातुस की विशेषता इस प्रकार बताई जा सकती है, ''जो लालची, हठीला, क्रूर और लूट और दमन का सहारा लेता था।''[6] अपने शासन के दौरान उसने यरूशलेम में कैसर की मूर्तियों वाले रोमी सिक्के लाकर, पवित्र मन्दिर के धन को जलसेतु बनाने के लिए लेकर और कई यहूदियों और सामरियों की हत्या करके यहूदियों के बीच दंगा भड़काया (लूका 13:1)।[7] कई बार ऐसे कामों के लिए जिनसे लोगों के बीच में विद्रोह भड़क जाता था, उसे डांट भी पड़ती थी।

पिलातुस आमतौर पर भूमध्य सागर के निकट एक प्रसिद्ध नगर कैसरिया में रहता था।[8] 1961 में जब पुरातत्वविद कैसरिया के रोमी थियेटर की खुदाई कर रहे थे तो उन्हें ''पुन्तियुस पिलातुस'' के नाम वाली पत्थर की एक सलैब मिली। थियेटर को नष्ट करके दोबारा से बनाया गया था और यह पत्थर (जो कभी मन्दिर का भाग था) सीढ़ियों में दोबारा लगाया गया था। इस शिलालेख में कहा गया है, ''... यह तिबेरियम, यहूदिया के सिद्ध, पुन्तियुस पिलातुस ने लगवाया।''[9]

पिलातुस किसी प्रकार की गड़बड़ को शांत करने के लिए यहूदी पर्वों के दौरान यरूशलेम में जाता था। फसह के समय धार्मिक और राष्ट्रीय भावनाएं पूरे उफान पर होती थीं (21:9 पर टिप्पणियां देखें)। यह जश्न परमेश्वर के लोगों को उनके पूर्वजों के मिस्र की दासता से छुड़ाए जाने को याद दिलाता था। इसके अलावा इससे उन्हें रोम के शासन से अपने छूटने की उम्मीद भी मिलती थी। पिलातुस यरूशलेम में था और यहूदी सभा के पास मृत्युदण्ड देने की कोई शक्ति नहीं थी (यूहन्ना 18:31), इस कारण उन्होंने वह निर्णय लेने के लिए यीशु को पिलातुस के पास भेज दिया।

यहूदा का पछतावा और मृत्यु
(27:3-10)

[3]जब उसके पकड़वाने वाले यहूदा ने देखा कि दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया और वे तीस चान्दी के सिक्के महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया। [4]और कहा, मैंने निर्दोषी को घात के लिए पकड़वाकर पाप किया है? उन्होंने कहा, हमें क्या? तू ही जान। [5]तब वह उन सिक्कों को मन्दिर में फेंककर चला गया, और जाकर अपने आप को फांसी दी। [6]महायाजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा, इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है। [7]सो उन्होंने सम्मति करके उन सिक्कों से परदेशियों के गाड़ने के लिए कुम्हार का खेत मोल ले लिया। [8]इस कारण वह खेत आज तक लोहू का खेत कहलाता है। [9]तब जो वचन यिर्मयाह भविष्यवक्ता के द्वारा कहा गया था वह पूरा हुआ; कि उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात उस ठहराए हुए मूल्य को जिसे इस्त्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था, ले लिया। [10]और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया।

आयतें 3, 4. यहूदा को जब समझ में आया कि यीशु **दोषी ठहराया गया है तो वह पछताया**। तौभी उसका शोक ऐसा नहीं था जो उसके छुटकारे का कारण बनता। पौलुस ने लिखा है कि "परमेश्वर भक्ति का शोक" पश्चात्ताप उत्पन्न करता है (2 कुरिन्थियों 7:10; NIV)। मत्ती में "पश्चात्ताप" के लिए यूनानी शब्द (*metanoeō*) नहीं, बल्कि वह शब्द इस्तेमाल किया जिसका अर्थ "पछतावा" वह शब्द (*metamelomai*) है। यहूदा ने क्षमा नहीं मांगी शायद उसे लगता था कि उसका कृत्य इतना भयंकर है कि उसकी क्षमा हो ही नहीं सकती। यह दुखद बात है कि उसे वास्तविक क्षमा की समझ नहीं थी; क्योंकि यदि वह सही ढंग से इसकी इच्छा करता तो वह भी पतरस की तरह वापस आ सकता था (यूहन्ना 21:15-19)।

यहूदा तीस चांदी के सिक्के लोगों के **महायाजकों और पुरनियों के पास फेर लाया,** जो उन्होंने उसे यीशु को पकड़वाने के लिए दिए थे और उसने माना कि **मैंने निर्दोष को घात के लिए पकड़वाकर पाप किया है**। पुराने नियम में "निर्दोष का खून" एक सामान्य अभिव्यक्ति थी। यह उन लोगों की हत्या को दर्शाता था, जो मृत्यु दण्ड के अपराध के दोषी नहीं होते थे (व्यवस्थाविवरण 19:10; 21:8, 9; 1 शमूएल 19:5; 2 राजाओं 21:16; 24:4; भजन संहिता 106:38; नीतिवचन 6:17; यशायाह 59:7)। यहूदा ने वास्तव में मसीह से विश्वासघात करने का पाप किया था। उसने पुराने नियम के काल की परमेश्वर की व्यवस्था को तोड़ा था: "शापित हो वह जो निर्दोष जन के मार डालने के लिए धन ले" (व्यवस्थाविवरण 27:25)।

यहूदी अगुओं ने बिना गड़बड़ किए यीशु को पकड़ना चाहा था। यहूदा उनके षड्यन्त्र में शामिल था और उसने उन्हें उनकी बुराई को पूरा करने दिया था।

इन लोगों ने जो लोगों के आत्मिक अगुआई करने वाले माने जाते थे, उससे कहा, "**हमें क्या? तू ही जान!**" उन्हें उसके साथ कोई सहानुभूति नहीं थी और उन्होंने उसे कोई सहायता देने की पेशकश नहीं की। यहूदा ने उनके मनसूबे को पूरा कर दिया और अब उन्हें उसकी कोई आवश्यकता नहीं है।

आयत 5. जब महायाजकों और पुरनियों ने उस धन को स्वीकार नहीं किया, तो वह इसे **मन्दिर में फैंक कर चला गया।** यूनानी शब्द (*naos*) जिसका अनुवाद मन्दिर हुआ है विशेष रूप से वास्तविक मन्दिर के लिए है, जहां याजक लोग सेवा करते थे। कई बार इसका अर्थ ''मन्दिर का पूरा अहाता'' होता है।[10] यहूदा ने लहू के पैसे मन्दिर की वेदी में फैंके होंगे। सम्भवत: अर्थ यही है कि उसने वह धन खज़ाने में फैंक दिया, जो स्त्रियों के आंगन में होगा (मरकुस 12:41, 42; यूहन्ना 8:20)।

इसके बाद यहूदा ने **जाकर अपने आप को फांसी दी।** लूका ने लिखा है कि उसकी लाश ज़मीन पर गिरकर फट गई (प्रेरितों 1:18)। हो सकता है कि यहूदा के मर जाने के बाद उसकी रस्सी टूट गई हो और वह ज़मीन पर गिर गया। यह भी हो सकता है कि उसकी लाश कई दिन तक पेड़ से लटकी रही हो और अन्त में गलने लगी हो और फटकर गिर गई हो। माइकल जे. विलकिंस ने लिखा है:

> नये नियम में आत्महत्या का केवल यही एक उदाहरण है। पुराने नियम में शाऊल और उसके हथियार ढोने वाले (1 शमूएल 31:4–5), अहीतोपेल (2 शमूएल 17:23), और ज़िम्री (1 राजाओं 16:18) के मामले मिलते हैं। शिमशोन की मृत्यु (न्यायियों 16:28–31) को वीरतापूर्ण आत्महत्या या अपने जीवन के कामों के अपरिहार्य परिणाम को स्वीकार करने के रूप में देखा जा सकता है। यहूदी मत में रब्बियों द्वारा आत्महत्या को नैतिक रूप में गलत, परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह माना जाता था जिसने जीवन दिया और केवल उसी को इसे लेने का अधिकार है।[11]

आयत 6. कपटी यहूदी अगुवे व्यवस्था पर ध्यान देने के प्रति चौकस थे चाहे वे इसे तोड़ ही रहे हों! **महायाजकों ने उन सिक्कों को लेकर कहा, इन्हें भण्डार में रखना उचित नहीं, क्योंकि यह लोहू का दाम है।** जैसा कि टीकाकारों ने ध्यान दिया है कि यदि यह धन मन्दिर के भण्डार से लिया गया था तो उनका कपट और भी बड़ा होना था।[12] ''भण्डार'' के लिए यूनानी शब्द (*korbanas*) है, जो ''परमेश्वर को समर्पित दान'' (*korban*) से सम्बन्धित है (15:5, 6 पर टिप्पणियां देखें)। व्यवस्था में अपवित्र ढंगों से कमाया गया धन परमेश्वर के घर में लाने के विरुद्ध चेतावनी थी (व्यवस्थाविवरण 23:18)।

आयत 7. याजक लहू का **पैसा** मन्दिर के भण्डार में नहीं रख सकते थे, इसलिए उन्होंने **कुम्हार का खेत** मोल लेकर **परदेशियों के गाड़ने के लिए** इस्तेमाल करने का निर्णय लिया। ''परदेशियों'' के लिए शब्द (*xenos* से) का अनुवाद ''विदेशी'' भी हो सकता है (NEB; NRSV; NLT)। यहां पर यह शब्द अन्यजातियों के लिए भी हो सकता है। अन्यजातियों को आम तौर पर यहूदी कब्रिस्तानों में नहीं दफ़नाया जाता था इसे उनके लिए कब्रिस्तान की सुविधा हो जानी थी। एक और सम्भावना है कि *xenos* अन्य स्थानों में रहने वाले परन्तु यरूशलेम आने के समय मर जाने वाले यहूदियों की ओर संकेत करता है। यहूदा भी इसी बाद वाली श्रेणी में आता है।

भूमि के इस टुकड़े को ''कुम्हार का खेत'' शायद इसलिए कहा जाता था क्योंकि इसे कुम्हार द्वारा मिट्टी लेने या टूटे बर्तनों को फैंकने के लिए इस्तेमाल किया जाता था। परम्परा ''कुम्हार के

खेत'' का स्थान हिनोम की तराई के दक्षिण-पूर्वी सिरे पर होना बताती है, चाहे इस जगह पर कुछ झगड़ा है।[13] आज कई समुदायों में निर्धनों या लावारिस लोगों के लिए कब्रिस्तान पाए जाते हैं, और उन्हें ''कुम्हार का खेत'' के नाम से ही जाना जाता है।

आयत 8. यहूदा के विश्वासघात से खरीदे गए **खेत** (''लहू का मोल''; 27:6) को **लहू का खेत** नाम दिया गया था। प्रेरितों 1:18, 19 में लूका ने अरामी भाषा का शब्द ''हकलदमा'' दिया है जिसका अर्थ है ''लहू का खेत।'' लहू के पैसे की ओर वापस बताने के बजाय उसने यह नाम खेत में यहूदा की लाश के फट जाने के सम्बन्ध में बताया। दोनों परम्पराओं में कोई विरोधाभास नहीं है, लोग स्पष्टतया अलग-अलग कारणों से इसे ''लहू का खेत'' कहने लगे।

आज तक वाक्यांश जो 28:15 में भी मिलता है, संकेत देता है कि इस घटना के घटने और सुसमाचार के मत्ती के विवरण के लिखे जाने के बीच काफ़ी समय बीत गया था। मत्ती ने यदि 50 के दशक के अन्त में या 60 के दशक के आरम्भ में लिखा, तो लगभग तीस साल बीत गए थे। ''आज तक'' वाक्यांश यहोशू और न्यायियों जैसी पुराने नियम की पुस्तकों में बार-बार मिलता है।

आयतें 9, 10. एक बार फिर मत्ती ने लिखा कि यह पवित्र शास्त्र की बात का **पूरा** होना था (1:22; 2:15, 17, 23; 4:14; 8:17; 12:17; 13:35; 21:4; 26:56)। यहूदा का लहू का दाम लौटाना और बाद में यहूदी अगुओं द्वारा कुम्हार के खेत का खरीदा जाना इन शब्दों का पूरा होना था: **''उन्होंने वे तीस सिक्के अर्थात उस ठहराए हुए मूल्य को (जिसे इस्राएल की सन्तान में से कितनों ने ठहराया था) ले लिया, और जैसे प्रभु ने मुझे आज्ञा दी थी वैसे ही उन्हें कुम्हार के खेत के मूल्य में दे दिया।''**

मत्ती ने यह उद्धरण **यिर्मयाह भविष्यवक्ता** का बताया, चाहे इसकी भाषा अधिकतर जकर्याह 11:13 के उद्धरण से मिलती है: ''तब यहोवा ने मुझ से कहा, इन्हें कुम्हार के आगे फेंक दे, यह क्या ही भारी दाम है जो उन्हों ने मेरा ठहराया है? तब मैं ने चान्दी के उन तीस टुकड़ों को लेकर यहोवा के घर में कुम्हार के आगे फेंक दिया।''

मत्ती के ''यिर्मयाह'' का हवाला बताने की अलग-अलग व्याख्याएं दी गई हैं। (1) एक सुझाव यह है कि लिपिकीय गलती के कारण गलत पहचान है।[14] (2) एक और विचार है कि यह उद्धरण यिर्मयाह की अप्रामाणिक पुस्तक से लिया गया है जो सम्भालकर नहीं रखी गई है। (3) यह हो सकता है कि मत्ती ने यिर्मयाह का उद्धरण इसलिए दिया क्योंकि उसकी पुस्तक का आरम्भ प्राचीन रब्बियों की कुछ सूचियों के नबियों के साथ हुआ था। इसलिए यिर्मयाह का उद्धरण भविष्यवक्ताओं के पूरे भाग की बात करने का सामान्य ढंग रहा होगा। इसी प्रकार से भजन संहिता की बातों को लेखों में मिलाया जाता था और इसे इब्रानी कविता का पूर्ण भाग कहा जा सकता था (लूका 24:44)। (4) एक अन्तिम व्याख्या है कि यिर्मयाह की बातें इस उद्धरण में मिलती हैं (देखें यिर्मयाह 18:2, 3; 19:1-13; 32:6-9), और मत्ती में कम प्रसिद्ध नबी (जकर्याह) की जगह अधिक प्रसिद्ध (यिर्मयाह) को उद्धृत किया। ऐसा ही उद्धरण मरकुस 1:2, 3 में मिलता है जहां पवित्र शास्त्र के उस उद्धरण के लिए जहां मलाकी के शब्दों के साथ (मलाकी 3:1) उसके लेख को मिलाकर (यशायाह 40:3) पवित्र शास्त्र का श्रेय यशायाह को दिया गया है। पहले और दूसरे सुझाव गलत नहीं हैं। यह सच्चाई सम्भवतया तीसरे या चौथे सुझाव

में दिखाई गई है जिसमें चौथा सबसे अधिक माननीय है।

रोमी पेशी, भाग 1 (27:11-14)

[11]जब यीशु हाकिम के साम्हने खड़ा था, तो हाकिम ने उस से पूछा; कि क्या तू यहूदियों का राजा है? यीशु ने उस से कहा, तू आप ही कह रहा है। [12]जब महायाजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे, तो उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया। [13]इस पर पिलातुस ने उस से कहा: क्या तू नहीं सुनता, कि ये मेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं? [14]परन्तु उस ने उस को एक बात का भी उत्तर नहीं दिया, यहां तक कि हाकिम को बड़ा आश्चर्य हुआ।

आयत 11. यहूदा की मृत्यु की खबर देने के बाद वचन वहीं से आरम्भ होता है, जहां आयत 2 में बंद हुआ। **यीशु** रोमी **हाकिम** पिलातुस के सामने जो उसे मृत्यु का दण्ड देने के लिए एकमात्र कानूनी अधिकार वाला व्यक्ति था, पेशी के लिए खड़ा था।[15] यूहन्ना 18:28 संकेत देता है कि यीशु से प्रेटोरियम के अंदर पूछताछ की गई थी (27:27 पर टिप्पणियां देखें)। पर पिलातुस यहूदियों से मिलने के लिए बाहर चला गया, क्योंकि वह अन्यजाति की इमारत में प्रवेश करके फसह के पर्व के दौरान अपने आपको औपचारिक रूप में अशुद्ध होने से बचने की उनकी इच्छा का सम्मान करता था (यूहन्ना 18:28-32)।

प्रेटोरियम या किले की जो यरूशलेम में गवर्नर का सरकारी निवास था, तीन सम्भावनाओं पर विचार किया गया है।[16] (1) यह अंटोनिया का किला हो सकता है जो मन्दिर के पहाड़ के उत्तर-पश्चिमी कोने में था (देखें प्रेरितों 21:34)।[17] पारम्परिक वाया डोलोरोसा (क्रूस का मार्ग) इसी जगह से आरम्भ होता है। (2) इस स्थान की एक और सम्भावना पुराना हसमोनी शाही महल है जो यूरोपी तराई की पश्चिमी ढलान पर था। मन्दिर के पहाड़ के उत्तर पश्चिमी कोने से बाहर।[18] (3) एक अन्तिम सम्भावना यरूशलेम के पश्चिम में हेरोदेस महान द्वारा बनाया गया सुन्दर महल है।[19] जोसेफस ने संकेत दिया है कि रोमी हाकिम यरूशलेम में रहते हुए इस महल का इस्तेमाल निवास और प्रबंधकीय कार्यालय के रूप में करते थे।[20]

पिलातुस ने यीशु से पूछा, "**क्या तू यहूदियों का राजा है?**" पहले महायाजक काइफा ने यीशु से पूछा था कि क्या "मसीह, परमेश्वर का पुत्र" वही है (26:63)। यहूदी अगुवे जब यीशु को पिलातुस के पास ले गए तो उन्होंने उस पर राजद्रोह का आरोप लगाया। उन्होंने दावा किया कि वह कैसर के विरोध में "यहूदियों का राजा" था (देखें लूका 23:13, 14; यूहन्ना 19:12, 21)।

यीशु ने पिलातुस को वैसे ही उत्तर दिया जैसे उसने यहूदा और काइफा को दिया था, "**तू आप ही कह रहा है**" (26:64 पर टिप्पणियां देखें)। यूहन्ना रचित सुसमाचार के अनुसार, यीशु ने इसके साथ कहा, "क्या तू यह बात अपनी ओर से कहता है या दूसरे ने मेरे विषय में तुझ से यह कहा है?" और फिर बताया, "मेरा राज्य यहां का नहीं" (यूहन्ना 18:34, 36)। इस अतिरिक्त जानकारी से पता चला कि यीशु रोमी साम्राज्य के लिए कोई खतरा नहीं था। यीशु वह मिलिटेंट राजा नहीं था जिसकी उम्मीद यहूदी लोग कर रहे थे, बल्कि वह सचमुच में उनका आत्मिक राजा बनने आया था (2:2; 16:16; 25:34, 40; यूहन्ना 1:49)।

आयत 12. जब महायाजक और पुरनिए उस पर दोष लगा रहे थे, तो उस ने कुछ उत्तर नहीं दिया। यह यशायाह 53:7 का पूरा होना था (26:62, 63 पर टिप्पणियां देखें)। लूका 23:2 के अनुसार यहूदी अगुवों ने यीशु पर (1) "[उन के] लोगों को भड़काते," (2) "कैसर को कर देने से मना करते," और (3) "अपने आपको मसीह, राजा कहते हुए" सुनने का आरोप लगाया।

आयतें 13, 14. पिलातुस ने यीशु को अपने आरोप लगाने वालों को उत्तर देने के लिए उकसाने की कोशिश की। उसने कहा, **"क्या तू नहीं सुनता, कि ये मेरे विरोध में कितनी गवाहियां दे रहे हैं?"** आम तौर पर आरोपी हर आरोप उनके विरुद्ध लगाया जाता छूट जाने की उम्मीद से सामना करते थे। यीशु ने दुख और मृत्यु का कटोरा पीने की ठान रखी थी इसलिए उसके लिए अपने आपको छुड़वाने की कोशिश करने की कोई आवश्यकता नहीं थी। यह भी सच है कि कुछ बेढंगे सवालों का जवाब देने की आवश्यकता नहीं होती है। पिलातुस **को बड़ा आश्चर्य हुआ** कि उसने **एक बात का भी** उत्तर देने की कोशिश नहीं की।

लूका ने जोड़ा कि पिलातुस ने यहां पर यीशु कों गलील के चौथाई के हाकिम हेरोदेस के पास पूछताछ के लिए भेज दिया जो फसह के लिए यरूशलेम में था (लूका 23:6–12)। हेरोदेस और उसके सिपाहियों की बारी यीशु का अपमान करने पर चौथाई के हाकिम को उसके विरुद्ध आधिकारिक आरोप नहीं मिल पाया। एक बार फिर यीशु ने हेरोदेस को कुछ नहीं कहा। उस राजा के सामने जिसने यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का सिर कटवा दिया था, वह बिल्कुल खामोश रहा था। हेरोदेस ने अपना फैसला दिए बिना यीशु को पिलातुस के पास वापस भेज दिया।

रोमी पेशी, भाग 2 (27:15-31)

यीशु से पूछ करने के बाद पिलातुस ने यहूदी अगुओं का बताया कि उसे उसमें मृत्यु के दण्ड के योग्य कोई कारण नहीं मिला (लूका 23:13–15; यूहन्ना 18:38)। फिर उसने फैसला लोगों के हाथ में छोड़ दिया।

पिलातुस का प्रस्तावित समाधान (27:15–18)

[15]और हाकिम की यह रीति थी, कि उस पर्ब्ब में लोगों के लिए किसी एक बन्धुए को जिसे वे चाहते थे, छोड़ देता था। [16]उस समय बरअब्बा नाम उन्हीं में का एक नामी बन्धुआ था। [17]सो जब वे इकट्ठे हुए, तो पिलातुस ने उन से कहा; तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है? [18]क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने उसे डाह से पकड़वाया है।

आयत 15. पिलातुस का फैसला देने से पहले मत्ती ने उस रीति के बारे में बताया कि किस प्रकार **हाकिम** फसह के **पर्व** के दौरान यहूदियों की विनती पर **किसी एक बंधुए** को छोड़ देता था। नये नियम के बाहर होने वाली इस घटना का कोई निर्विवाद रिकार्ड तो नहीं पर है परन्तु मिशनाह के एक पद में इसकी बात हो सकती है। वह पद कहता है कि फसह का मेमना "जिस व्यक्ति को उन्होंने जेल से छोड़ने का वचन दिया है की ओर से" काटा जाए।[21] परन्तु प्रमुख पर्वों पर कैदियों को छोड़ने की प्रथा प्राचीन जगत में आम थी।[22]

आयत 16. एक **बंधुआ** जो इस समय हिरासत में था वह **बरअब्बा** नाम का था। उसके नाम का अर्थ ''अब्बा का पुत्र'' (*bar-Abba*)[23] या ''पिता का पुत्र'' (*bar-abba*)[24] हो सकता है। कइयों ने तो यह भी मान लिया है कि इसका अर्थ ''गुरु का पुत्र'' (*bar-rabban*) हो सकता है, परन्तु यह बात को लम्बा करना लगता है। **नामी** के लिए यूनानी शब्द (*episēmos*) का मूल अर्थ ''चिह्नित किया हुआ'' या ''निशान लगाना'' है। इसका उत्तर सकारात्मक अर्थ में ''प्रसिद्ध'' या ''परिश्रमी'' के लिए हो सकता है (रोमियों 16:7)। इसका नकारात्मक अर्थ में इस्तेमाल ''बदनाम'' या ''कुख्यात'' के लिए भी हो सकता है। बरअब्बा यरूशलेम में हुए बलवे में भाग लेने और हत्या करने के कारण प्रसिद्ध व्यक्ति था (मरकुस 15:7; लूका 23:19; यूहन्ना 18:40)।

आयत 17. जब वे इकट्ठे हुए [थे], तो हाकिम ने उनसे पूछा, ''तुम किस को चाहते हो, कि मैं तुम्हारे लिए छोड़ दूं? बरअब्बा को, या यीशु को जो मसीह कहलाता है?'' पिलातुस ने यहूदियों को यीशु (शांति पसंद, धर्मी व्यक्ति) और बरअब्बा (लोगों को भड़काने वाले हत्यारे और लुटेरे) में से एक को चुनने का अवसर देते हुए यीशु को छोड़ देने की पेशकश की।

कुछ प्राचीन हस्तलिपियों में इस व्यक्ति को ''यीशु बरअब्बा'' कहा गया है, जो इस अन्तर को बहुत बढ़ा देता है (देखें TEV; NEB; NRSV; CEV)। एक अर्थ में पिलातुस कह रहा था, ''तुम्हें कौन सा यीशु ('उद्धारकर्त्ता') चाहिए? यीशु बरअब्बा या यीशु मसीह?'' आर. टी. फ्रांस ने तर्क दिया है, ''मसीही लेखकों के लिए बरअब्बा के लिए यीशु नाम *जोड़ने* की कल्पना करना यदि यह वचन में पहले से नहीं था, बहुत कठिन है। उनके इस बात को दबाने को समझना बहुत आसान है ... विशेषकर जब सुसमाचार के किसी विवरण में उसके पहला कोई उल्लेख नहीं है।''[25] ब्रूस एम. मैज़गर ने सुझाव दिया है कि मसीह के लिए सम्मान के कारण बरअब्बा के नाम से ''यीशु'' हटा दिया गया।[26]

आयत 18. पिलातुस को विश्वास नहीं था कि यीशु किसी अपराध का दोषी है। उसने समझ लिया था कि यहूदी अगुवे यीशु को **डाह से** पकड़ लाए थे।[27] पिलातुस की इच्छा उसे छोड़ देने की थी (लूका 23:20)। स्पष्टतया उसने सोचा कि यीशु और बरअब्बा के बीच पसन्द होने पर लोग यीशु को छोड़ देने को चुनेंगे। यह पसन्द देकर पिलातुस शांति बनाये रखकर इस मामले में किसी भी प्रकार की जिम्मेदारी से अपने आपको बरी करने की कोशिश कर रहा था।

भीड़ की पुकार (27:19-23)

[19]जब वह न्याय की गद्दी पर बैठा हुआ था तो उस की पत्नी ने उसे कहला भेजा, कि तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना; क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है। [20]महायाजकों और पुरनियों ने लोगों को उभारा, कि वे बरब्बा को मांग लें, और यीशु को नाश कराएं। [21]हाकिम ने उन से पूछा, कि इन दोनों में से किस को चाहते हो, कि तुम्हारे लिए छोड़ दूं? उन्होंने कहा; बरअब्बा को। [22]पिलातुस ने उनसे पूछा; फिर यीशु को जो मसीह कहलाता है, क्या करूं? सब ने उस से कहा, वह क्रूस पर चढ़ाया जाए। [23]हाकिम ने कहा; क्यों उसने क्या बुराई की है? परन्तु वे और भी चिल्ला, चिल्लाकर कहने लगे, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।''

आयत 19. भीड़ से बात करते समय पिलातुस **न्याय की गद्दी** (*bēma*) **पर बैठा हुआ था।** यह ''खुले आकाश में लगी सरकारी अदालत थी (तुलना प्रेरितों 18:12, 16–17, 25:17)।''[28] पिलातुस जब न्यायाधीश का काम कर रहा था **तो उसकी पत्नी ने उसे कहला भेजा।** यदि उसे यह अत्यधिक आवश्यक न लगता तो उसने इस प्रकार का हस्तक्षेप करने वाला व्यवहार नहीं करना था। उसने उसे सलाह दी, **''तू उस धर्मी के मामले में हाथ न डालना क्योंकि मैं ने आज स्वप्न में उसके कारण बहुत दुख उठाया है।''**

यह स्पष्ट नहीं है कि ''धर्मी'' शब्द से उसकी पत्नी का क्या अर्थ था। ''धर्मी'' के लिए यूनानी शब्द (*dikaios*) का अनुवाद ''निर्दोष'' भी हो सकता है (NIV; NRSV; NLT)।[29] शायद उसके कहने का अर्थ कवल इतना था कि यीशु पर किसी अपराध का दोष नहीं था इस कारण उसे दण्ड नहीं दिया जाना चाहिए था। परन्तु मसीह पर लागू करने पर *dikaios* का अर्थ गहरा हो सकता है। नये नियम की अगली पुस्तकों में उसके पाप रहित स्वभाव को दिखाने के लिए इसका इस्तेमाल किया गया है। वास्तव में ''धर्मी'' मसीहा के पद के लिए मिलता है (प्रेरितों 3:14; 7:52; 1 यूहन्ना 2:1)।

मत्ती इस स्वप्न के आने को जिसने पिलातुस की पत्नी को बहुत परेशान कर दिया था, इसके साथ नहीं मिलाता। हो सकता है कि यह परमेश्वर की ओर से हो, जैसे मत्ती के आरम्भिक अध्यायों में यूसुफ को स्वप्न मिले थे (1:20; 2:12, 13, 19, 22)। CEV में उसकी बात को इस प्रकार अनुवाद किया गया है, ''उसके कारण मेरी रातों की नींद जाती रही है।'' उसे स्वप्न रात को आते थे (''पिछली रात''; NASB) या सुबह को (''आज''; NIV), उसे अपने पति को बताने का अवसर नहीं मिला था।

परम्परा के अनुसार, पिलातुस की पत्नी के नाम ''प्रोक्ला,'' ''प्रोकुला'' या ''क्लौदिया प्रोकुला'' था। इस दावे सहित कि वह यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद मसीहियत में परिवर्तित हो गई थी, इस स्त्री की बहुत सी कहानियां हैं। कौपटिक चर्च उसकी याद मनाता है और ग्रीक आर्थोडॉक्स चर्च ने अपने संतों की सूची में उसका नाम रखा है। जो मत्ती में लिखा गया है उससे बढ़कर उसके बारे में बहुत कम पता चलता है।

आयत 20. स्पष्टतया मुकदमे की कार्यवाही थोड़ी देर के लिए रुक जाने पर यहूदी अगुवों ने **लोगों को उभारा कि बरअब्बा** को छोड़ दिया जाए **और यीशु** को मृत्युदण्ड दिया जाए। भीड़ में से कुछ लोग गलीली यहूदी होंगे, जिन्होंने पहले ही यरूशलेम में प्रवेश करने पर यीशु की महिमा ''दाऊद का पुत्र'' के रूप में की थी। परन्तु बहुत से लोग यरूशलेम से होंगे और उनका यीशु के साथ मजबूत रिश्ता नहीं होगा (21:9–11 पर टिप्पणियां देखें)।

आयत 21. अपनी पत्नी के बात से उसके विवेक को झिंझोड़ने पर पिलातुस अपने प्रश्न पर वापस आया कि किस कैदी को छोड़ दूं। बरअब्बा को या यीशु को। स्पष्टतया उसको लगा कि दोनों में से एक को चुनने की पसन्द देने पर लोग यीशु को ही चुनेंगे। बेशक उनका उत्तर कि **''बरअब्बा को''** सुनकर वह स्तब्ध रह गया।

बरअब्बा एक कुख्यात विद्रोही था (27:16; मरकुस 15:7; लूका 23:19; यूहन्ना 18:40)। कुछ यहूदी चाहे बरअब्बा से घृणा करते हों और उससे डरते हों पर दूसरे लोगों के लिए वह आदर्श हो सकता है। ऐसे लोग आम तौर पर साधारण लोगों में प्रसिद्ध होते थे क्योंकि वे धनवान

यहूदियों से लूटकर रोमी सरकार के लिए परेशानी खड़ी करते थे। यीशु के विपरीत उन्होंने बरअब्बा को इसलिए पसन्द किया होगा, क्योंकि वह रोमियों के विरुद्ध लड़ने को तैयार था। उसके विपरीत यीशु ने स्पष्ट कर दिया था कि राजनैतिक सत्ता को उखाड़ने के लिए सेना खड़ी करने का उसका कोई इरादा नहीं था।[30] बरअब्बा को ''रॉबिन हुड किस्म का लोकनायक'' बताया गया है।[31]

अगुओं ने बरअब्बा का समर्थन नहीं करना था, क्योंकि उनमें से अधिकतर प्यों की त्यों परिस्थिति रखने में पक्ष में थे। आखिर रोमी सरकार का तख्ता पलटने की कोशिश से अधिकार की उनकी पदवियां भी जा सकती थीं (देखें यूहन्ना 11:47-53)। तौभी ये अगुवे यीशु को खत्म करने के लिए लोगों की राष्ट्रीय भावना और बरअब्बा के लिए उनकी प्रशंसा का इस्तेमाल करने को तैयार थे। इन अगुओं के मनों में, बरअब्बा को छुड़ाना दोनों में से कम बुराई था।

आयत 22. फिर **पिलातुस** ने भीड़ से पूछा, **''फिर यीशु को, जो मसीह कहलाता है, क्या करूं?''** ''मसीह'' शब्द का इस्तेमाल उसने यीशु बरअब्बा से अलग करने के लिए किया होगा (27:17 पर टिप्पणियां देखें)। एक और सम्भावना है कि वह लोगों को यीशु के पिछले अनुमान को याद कराना चाहता था। उनमें से कइयों ने उसे मसीहा (''यहूदियों का राजा''; मरकुस 15:12) होना मान लिया था, परन्तु अब वे उसकी जगह एक अपराधी को छुड़ाना चाह रहे थे।

बिना हिचकिचाहट के, **सबने उससे कहा, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।''** यीशु के लिए मृत्युदण्ड देने की बात कहने में उन सब का निर्णय एक था। मृत्युदण्ड का क्रूर रूप जिसका इस्तेमाल किया जाने वाला था वह आम तौर पर अपराधियों और गुलामों के लिए ही होता था। यह श्रापित लोगों को दी जाने वाली मृत्यु थी (व्यवस्थाविवरण 21:23; गलातियों 3:13)।

आयत 23. पिलातुस ने यह पूछते हुए उत्तर दिया, **''क्यों, उसने क्या बुराई की है?''** उसने यीशु से पूछताछ की थी और उसे किसी भी अपराध से निर्दोष पाया था (लूका 23:4, 14)। इसके अलावा उसकी पत्नी ने यीशु के साथ उसे कुछ न करने की सलाह दी थी क्योंकि वह ''धर्मी'' था (27:19)।

भीड़ ने पिलातुस के प्रश्न पर ध्यान नहीं दिया। **वे और भी चिल्ला-चिल्लाकर कहने लगे, ''वह क्रूस पर चढ़ाया जाए।''** एक बार फिर वे यहूदी अगुओं के झांसे में आ गए थे, उन्होंने रोमी हाकिम को उनके मन नहीं बदलने दिए।

पिलातुस का लोगों के आगे झुकना (27:24-26)

[24]जब पिलातुस ने देखा, कि कुछ बन नहीं पड़ता परन्तु इसके विपरीत हुल्लड़ होता जाता है, तो उसने पानी लेकर भीड़ के साम्हने अपने हाथ धोए, और कहा; मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं; तुम ही जानो। [25]सब लोगों ने उत्तर दिया, कि इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो। [26]इस पर उस ने बरअब्बा को उन के लिए छोड़ दिया, और यीशु को कोड़े लगवाकर सौंप दिया, कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।

आयत 24. पिलातुस को समझ आ गया कि वह भीड़ के साथ कहीं नहीं टिकने वाला;

उसके बजाय हुल्लड़ बढ़ता जाता है। उसने आम तौर पर अपनी नीतियों के कारण कालांतर में यहूदियों में विद्रोह और दंगे होते देखे थे (27:2 पर टिप्पणियां देखें)। स्पष्टतया अपने कार्यकाल के इस चरण में वह किसी अनावश्यक झगड़े से बचना चाहता था जिससे नेतृत्व की उसकी स्थिति गड़बड़ा सकती थी। रोम की ओर से ठहराए होने के कारण शांति बनाए रखना उसकी जिम्मेदारी थी। इसलिए उसने वही किया जो राजनैतिक रूप में सही था। उसने अपने आपको किसी भी सरकारी दायित्व से मुक्त करने की कोशिश करते हुए भीड़ की इच्छा पूरी कर दी।

उसने पानी लेकर भीड़ के सामने अपने हाथ धोए और कहा, "मैं इस धर्मी के लोहू से निर्दोष हूं; तुम ही जानो। लोगों के सामने हाथ धोना निर्दोष होने की घोषणा करने की एक प्राचीन रीति थी (व्यवस्थाविवरण 21:6-9; अय्यूब 9:30; भजन संहिता 26:6; 73:13; यिर्मयाह 2:22)। भीड़ से "तुम ही जानो" कहकर पिलातुस यीशु की मृत्यु की जवाबदेही यहूदियों के ऊपर डाल रहा था। अध्याय में पहले यहूदी अगुओं ने यहूदा को अपने उत्तर में इसी भाषा का इस्तेमाल किया था (27:4)।

आयत 25. लोगों पर पिलातुस के इशारे का कुछ असर नहीं हुआ, और वे पुकार उठे, **"इसका लोहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो!"**[32] *इस जीवन में* बच्चों के अपने माता-पिता के पाप का बदला चुकाने का विचार कई बार पुराने नियम में मिलता है (यहोशू 7:24; यिर्मयाह 26:15; विलापगीत 5:7)। परन्तु अन्य वचनों से संकेत मिलता है कि हर व्यक्ति अपने ही कामों के लिए जवाबदेह है (यहेजकेल 18)। न्याय के दिन हम *अपने* ही किए हुए कामों का हिसाब देंगे, जो *आने वाले जीवन* के लिए हमारे भविष्य को तय करेगा (रोमियों 2:5-11; 2 कुरिन्थियों 5:10)।

स्पष्ट रूप में यहूदियों के उनके द्वारा सताव को सही ठहराने के लिए इस आयत का इस्तेमाल करते हुए कुछ लोगों ने सदियों से यहूदियों के दोष के सम्बन्ध में इसका दुरुपयोग किया है। परन्तु यह ध्यान दिया जाना चाहिए कि जैसा कि लियोन मौरिस ने कहा है कि यह "बेकाबू भीड़ की जिम्मेदारी की बिना सोच के मान्यता से बढ़कर नहीं" था।[33] इन लोगों को अपने बुरे कामों के लिए जो वे कर रहे थे अपनी जाति को जोड़ने का अधिकार नहीं था। इसके अलावा वे यहूदी लोगों की भावी पीढ़ियों को दण्ड देने के लिए परमेश्वर को मजबूर नहीं कर सकते थे। यह ध्यान रखा जाना चाहिए कि यीशु और उसके सब प्रेरित यहूदी ही थे। इसके अलावा यरूशलेम की आरम्भिक कलीसिया में सब यहूदी ही थे।

आयत 26. भीड़ ने जब यीशु का विरोध करना नहीं छोड़ा तो पिलातुस ने **बरअब्बा को उन के लिए छोड़ दिया।** इस दोषी अपराधी को निर्दोष मसीह के बदले में छोड़ दिया गया। छूट जाने के बाद बरअब्बा ने क्या किया इस पर बाइबल खामोश है।

क्रूस पर चढ़ाने से पहले पिलातुस ने यीशु **को कोड़े** (*phragelloō*) लगवाए। लूका 23:16, 22 के अनुसार पिलातुस ने पहले यहूदियों को शांत करने के लिए यीशु को कोड़े मारकर दण्ड देने का सुझाव दिया था; उसके बाद वह उसे छोड़ देना चाहता था। परन्तु उसके सुझाव का उन पर कोई असर न हुआ क्योंकि यह यहूदी अगुवे और भीड़ यीशु की मृत्यु से कम पर राजी नहीं होने थे। यहां पर यीशु को जो कोड़े मारे गए वे क्रूस पर ले जाने से पहले के लिए थे। क्रूस पर चढ़ाए जाने का दण्ड पाने वालों के लिए पहले कोड़े मारे जाना आम बात थी-जो अपराध को

रोकने का काम करने वाला व्यवहार भी था।[34]

क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले का कोड़े मारे जाना सबसे कठोर किस्म दण्ड था। रोमी लोग चमड़े का पट्टा या चाबुक का इस्तेमाल करते थे जिस पर धातु या हड्डी के टुकड़े लगे होते थे।[35] चाबुक की मार से व्यक्ति के मास में कट लग जाता था जिससे आम तौर पर हड्डियां और दूसरे अंग दिखाई देने लगते थे।[36] कोड़े मारना इतना क्रूर होता था कि कई बार व्यक्ति क्रूस पर ले जाए जाने से पहले ही मर जाता था।[37]

यहूदी अगुओं की इच्छा पूरी करते हुए, यीशु को कोड़े मारे जाने के बाद पिलातुस ने उसे रोमी सपाहियों को **सौंप दिया कि क्रूस पर चढ़ाया जाए।**

सिपाहियों का ठट्ठा उड़ाना (27:27-31)

[27]तब हाकिम के सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके चहुं ओर इकट्ठी की। [28]और उसके कपड़े उतारकर उसे किरमिची बागा पहनाया। [29]और कांटों का मुकुट गूंथकर उसके सिर पर रखा; और उसके दाहिने हाथ में सरकण्डा दिया और उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठे में उड़ाने लगे, कि हे यहूदियों के राजा नमस्कार। [30]और उस पर थूका; और वही सरकण्डा लेकर उसके सिर पर मारने लगे। [31]जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो वह बागा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहिनाए, और क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले।

आयत 27. कोड़े मारने के बाद **सिपाहियों ने यीशु को किले में ले जाकर सारी पलटन उसके चारों ओर इकट्ठी की।** यीशु से पहले प्रिटोरियम यानी किले के अंदर पूछताछ की गई जहां हाकिम का निवास था (27:11; यूहन्ना 18:28)। इस बार उसे सिपाहियों द्वारा यहां पर अपमानित किया गया।

पूरी रोमी पलटन जिसमें आम तौर पर 600 सौ पुरुष होते थे, मसीह के ठट्ठा उड़ाने में भाग लेने या इसे देखने के लिए जमा हुई होगी। पर यूनानी शब्द (*speira*) जिसका अनुवाद ''पलटन'' हुआ है का इस्तेमाल प्राचीन साहित्य में ''सैनिक टुकड़ी'' के लिए भी हो सकता है जिसमें 200 पुरुष होते थे।[38] हो सकता है कि यहां पर बाद वाली इकाई ध्यान में हो। पलटन हो या मैनिपल, यह यूनिट अन्दर बैरकों में रहती थी; यानी ये लोग ''हाकिम के सिपाही'' थे।

आयत 28. सिपाहियों ने ठट्ठा उड़ाने के लिए यीशु के विरुद्ध जिस आरोप का इस्तेमाल किया वह यह था कि वह ''यहूदियों का राजा'' था (27:11)। पहले तो उन्होंने उसके अपने **कपड़े उतार दिए और उसकी घायल, लहूलुहान पीठ पर उसे किरमिची बागा पहिनाया।** यह ''बागा'' (*chlamus*) कोई पुराना वस्त्र होगा जो सिपाहियों में से किसी का था।[39] यह ''किरमिची'' (*kokkinos*) या ''लाल'' रंग का ''महंगे बैंजनी वस्त्रों के उलट सस्ता रंगा हुआ वस्त्र था ... जिसके रंग सिप्पियों से लिए गए थे और ऊपर से सिला हुआ था।''[40] रंग यीशु का ठट्ठा उड़ाने के लिए था कि जैसे वह राजसी बैंजनी वस्त्र पहिने हुए कोई राजा हो। मरकुस जो यहां पर अधिक सामान्य था, कहा कि उन्होंने ''उसे बैंजनी वस्त्र पहिनाया'' (मरकुस 15:17)।

आयतें 29, 30. सिपाहियों ने कांटों की टहनी को मोड़कर उसका **मुकुट** बनाया और

इसे **उसके सिर** पर रख दिया। ''मुकुट'' के लिए यूनानी शब्द (*stephanos*) का अर्थ आम तौर पर विजय माला होता था पर यहां पर इसका इस्तेमाल शासक के मुकुट (*diadēma*) का संकेत देने के लिए किया गया है। सोने का चमकता मुकुट पहनने के बजाय यीशु ने कांटों का फटीचर सा मुकुट पहना। उन्होंने उसकी खोपड़ी में कांटे ठूस दिए होंगे, जिससे अत्यधिक पीड़ा हुई होगी। यह व्यवहार उन अन्य ढंगों से मेल खाता था जिनसे उन्होंने उसे सताया था। यह भी हो सकता है कि कांटों की नोकें सम्राटों द्वारा पहने जाने वाले तीखे मुकुटों की नकल करने के लिए बाहर को निकाल दिए गए हों, जैसा कि कुछ प्राचीन सिक्कों में दिखाया जाता है। तीखा मुकुट पहनने वाले कई ईश्वरीय होने का संकेत देता था।[41]

उन्होंनें राजा की छड़ी दिखाने के लिए **उसके दाहिने हाथ में सरकंडा** भी पकड़ा दिया। दाहिना हाथ डंडे की तरह ही शक्ति और अधिकार का प्रतीक था। ''सरकंडा'' (*kalamos*) हवा में झूलता है और आसानी से टूट जाता है (11:7; 12:20)। ऐसा डंडा मज़बूत शाखाओं से बने डंडे (यहेजकेल 19:11, 14) या लोहे (भजन संहिता 2:9; प्रकाशितवाक्य 2:27; 12:5) से उलट है। सरकंडे का डंडा इस्तेमाल करते हुए सिपाही यही संकेत देते हुए कि यीशु का ठट्ठा उड़ा रहे थे कि वह दुर्बल व्यक्ति है। उसकी सेनाएं और उसके हथियार कहां गए? उसके सेवक और उसकी वफ़ादार प्रजा कहां थे? उसका शाही सिंहासन वाला उसका महल कहां था? यहूदियों का राजा होने के यीशु के दावे को, समर्थन देने के लिए लगता है कि कोई शारीरिक प्रमाण नहीं था।

उसका शाही लिबास पूरा कर लेने के बाद ये क्रूर लोग **उसके आगे घुटने टेककर उसे ठट्ठे में उड़ाने लगे; ''हे यहूदियों के राजा, नमस्कार!''** फ्रांस ने टिप्पणी की है, ''*हे यहूदियों के राजा नमस्कार!* सामान्य अभिवादन *एव सीज़र* को दर्शाने के लिए भी हो सकता है।''[42] शायद वे यीशु का इस प्रकार से आदर करने का दिखावा कर रहे थे जैसे वे अपने सम्राट का कर रहे हों।

सिपाहियों ने यीशु **पर थूका,** वैसे ही जैसे यहूदी अगुओं ने किया था (26:67)। उन्होंने ने भी उससे वह सरकंडा, जो उन्होंने डंडे के रूप में उसे दिया था ले लिया और इसे **उसके सिर पर मारने** के लिए इस्तेमाल किया।

आयत 31. जब वे उसका ठट्ठा कर चुके, तो वह बागा उस पर से उतारकर फिर उसी के कपड़े उसे पहिनाए। हो सकता है कि कांटों का मुकुट उसके सिर से उतार लिया गया हो। रोमी सिपाही उसे **क्रूस पर चढ़ाने के लिए ले चले।** यीशु को कोड़े मारे जाना, ठट्ठा किए जाना, और क्रूस पर चढ़ाए जाना सब यह दिखाते हुए कि ये सब चीज़ें परमेश्वर की पहले से ठहराई योजना का भाग थीं, उसकी भविष्यवाणी का पूरा होना था (20:19)। सिपाहियों के लिए यह रोज की तरह एक और दिन था। उन्होंने यीशु से पहले असंख्य यहूदियों को इस प्रकार से सताया ओर मृत्युदण्ड दिया था और उसके बाद भी उन्होंने कई यहूदियों के साथ ऐसा ही करना था।

यीशु के किले से बाहर निकलते हुए उसे अपने गले में यह चिह्न लटकाना पड़ा होगा जिसमें लिखा था, ''यीशु नासरी, यहूदियों का राजा'' (27:37; मरकुस 15:26; लूका 23:38; यूहन्ना 19:19)। सिपाहियों ने उससे उस क्रूस को उठवाकर जिस पर उसने मरना था गलियों में घुमाया। यदि यह चिह्न उसके गले में नहीं था तो यह किसी रोमी सिपाही ने उठाया होगा जो उसके आगे आगे चल रहा था।[43] यह चिह्न जिसमें शायद और भी बातें थीं, बाद में क्रूस पर उसके सिर के ऊपर लगाया जाना था। पिलातुस ने यह सुनिश्चित किया कि इसे अरामी, लातीनी और यूनानी

भाषाओं में लिखा जाए ताकि पास से गुज़रने वाले लोग इसे पढ़ सकें (यूहन्ना 19:20; NIV)।

❖❖❖❖❖ **सबक** ❖❖❖❖❖

मनुष्य पुन्तियुस पिलातुस (27:1, 2, 11-26)

यहूदिया के सिद्ध के रूप में उसके नाम को छोड़ हमें पुन्तियुस पिलातुस की पक्की जानकारी नहीं है। "पुन्तियुस" उस समय दक्षिण केन्द्रीय इटली में एक प्रमुख पारिवारिक नाम था। कौदीन शाखाओं में रोमियों पर "पुन्तियुस" ने ज़ोरदार पराजय दी थी। लुसियस पुन्तियुस अकविला सिसेरो का मित्र और जूलियस सीज़र के हत्यारों में से एक था। "पिलातुस" नाम सम्भवतया पुन्तियुस घराने की शाखा का संकेत था, जिससे पुन्तियुस पिलातुस निकला था। इस नाम का अर्थ खो चुका है।

यहूदिया के पांचवें सिद्ध के रूप में पिलातुस ने उस इलाके पर राज किया जिस पर 6 ईस्वी में रोमियों द्वारा गद्दी से उतार दिए जाने से पहले अरखिलाउस का राज्य था। उसके पास नागरिक, सैनिक और न्यायिक इलाका था। वह ग्रेटुस का उत्तराधिकारी था और दस सालों तक पद पर रहा था। उसे सीरिया के राजदूत विटेलियुस द्वारा पद से उतार दिया गया था (ईस्वी 26-36)। पद से उतारे जाने के बाद वह तिबरियुस के सामने अपनी सफ़ाई रखने के लिए जल्दी-जल्दी रोम में चला गया। परन्तु उसके रोम पहुंचने तक सम्राट की मृत्यु हो गई थी (ईस्वी 37 के मार्च महीने में)। सम्राट की मृत्यु से पैदा उलझन में पिलातुस गड़बड़ से बचकर निकल गया लगता है। उसके बाद से हमारे पास पिलातुस के जीवन का कोई पक्का, विश्वसनीय ऐतिहासिक रिकॉर्ड नहीं है।

फिलो ने पिलातुस पर भ्रष्टाचार, हत्या और घिनौने अमानवीय होने का आरोप लगाते हुए उसे बेरहम आवेशों और अत्यधिक क्रूरता वाले व्यक्ति के रूप में दिखाया है।[44] एक परम्परा के अनुसार पिलातुस पागल हो गया और अपमान और कलंक से मर गया। यूसबियुस ने लिखा है कि पिलातुस ने अपनी ही जान ले ली।[45] इसके उलट कौपटिक चर्च में यह दावा करते हुए कि वह और उसकी पत्नी बाद में मसीही बन गए थे, उसे संतों की सूची में शामिल किया गया है।

बेशक पिलातुस के पास यीशु को छोड़ देने की शक्ति थी और उसने उसे नहीं छोड़ा, परन्तु क्रूस पर चढ़ाना यहूदी अगुओं की ज़िद के बिना नहीं होना था। परन्तु चाहे पिलातुस ने मामले से बरी होने की कोशिश के लिए अपने हाथ धोने की कोशिश की (27:24), पर उसके लिए सारी जवाबदेही से मुक्त होना असम्भव था। यीशु ने पिलातुस को बताया था कि जिन्होंने उसे उसके हाथ सौंपा था उनका "पाप अधिक" था (यूहन्ना 19:11; देखें प्रेरितों 3:13; 4:27, 28)।

कोड़े मारे जाने का संताप (27:26)

यीशु को मिली मार की अत्यधिक कठोरता का वर्णन सुसमाचार के चारों विवरणों में से किसी में भी नहीं किया गया है (27:26 पर टिप्पणियां देखें)। ऐसा करना अनावश्यक था, क्योंकि प्राचीन लोग ऐसे दृश्यों से भली भांति परिचित होते थे। "क्रूसारोहण" शब्द की तरह "कोड़े मारे जाना" के लिए शब्द कहना ही किसी की मानसिक स्थिति को बताने के लिए काफ़ी होता था (27:26 पर टिप्पणियां देखें)।

यहूदी लोग चाहे केवल उन्तालीस कोड़े मार सकते थे (2 कुरिन्थियों 11:24), परन्तु रोमियों को तरस करने का पता नहीं था और वे यहूदियों की व्यवस्था से सीमित नहीं थे। यीशु को मारे गए कोड़ों की गिनती वास्तव में पता नहीं है।

यीशु को कोड़े मारे जाना विशेष रूप से दर्द भरा था। केवल चमड़े के पट्टे के बजाय यूनानी शब्द उस मार की ओर संकेत करता है जिसमें धातु के टुकड़ों वाला और इसमें हड्डी लगा चाबुक इस्तेमाल किया गया था। बेशक इसे कुशल रोमी सिपाही द्वारा चलाया जाता था। डॉक्टर लोग इस कार्य के लिए कहते हैं कि यीशु को शॉक से पहले की स्थिति में छोड़ दिया गया होगा। इसलिए वास्तविक क्रूसारोहण से पहले भी यीशु डॉक्टरी दृष्टिकोण से गम्भीर और शायद नाजुक स्थिति में था।

यीशु को मारे गए क्रूरतापूर्वक कोड़े क्रूस पर चढ़ाने के पहले था। वास्तव में दोनों घटनाएं जोड़ दी जाती हैं। यशायाह ने दुखी दास की भविष्यवाणी की थी:

> परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया,
> वह हमारे अधर्म के कामों के कारण कुचला गया,
> हमारी ही शांति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी,
> कि *उसके कोड़े खाने से* लोग चंगे हो जाएं (यशायाह 53:5)।

पतरस ने इसी भाषा का इस्तेमाल किया, जब उसने लिखा, ''वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया, जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं: *उसी के मार खाने* ['कोड़ों की मार'; KJV] से तुम चंगे हुए'' (1 पतरस 2:24)।

डेविड स्टिवर्ट

टिप्पणियां

[1]प्लाइनी *लैटर्स* 3.1.4; 3.5.9–11; 4.16.4, 5; 9.36.1; मार्शल *एपिग्राम्स* 4.8.5–8. [2]जॉन लाइटफुट, *ए कमैंट्री ऑन द न्यू टैस्टामेंट फ्रॉम द टालमुड एंड हेब्रिका: मैथ्यू-1 कोरिंथियंस,* अंक 2, *मैथ्यू -मार्क* (ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रैस, 1859; रिप्रिंट, ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर, 1979), 359–60. [3]पिलातुस यहूदिया का ''सिद्ध'' था। कुछ प्राचीन स्रोतों में भी उसे ''मुखतार'' कहा गया है, परन्तु कइयों का मानना है कि यह शब्द एक कालदोष है। [4]देखें ब्रूस एम. मैत्ज़गर, *ए टैक्सचुअल कमैंट्री ऑन द ग्रीक न्यू टैस्टामेंट,* 2रा संस्क. (स्टटगर्ट: जर्मन बाइबल सोसायटी, 1994), 54–55. [5]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.2.2; फिलो *एम्बेसी टू गेयुस* 299–305; टेसिटुस *ऐनल्स* 15.44. [6]हेरल्ड होहनर, *हेरड अन्टिपास,* सोसायटी फॉर न्यू टैस्टामेंट स्टडीज़ मोनोग्राफ सीरीज़, 17 (कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, 1972), 173. [7]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.3.1–2; 18.4.1–2; *वार्स* 2.9.2–4. [8]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 18.3.1. [9]*ज़ौंडरवन इलस्ट्रेटिड बाइबल बैकग्राउंड्स कमैंट्री,* अंक 1, *मैथ्यू, मार्क, लूक,* संपा. क्लिंटन ई. अरनोल्ड (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: ज़ौंडरवन, 2002), 171 में माइकल जे. विलकिंस, ''मैथ्यू।'' [10]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन आफ द न्यू टैस्टामैंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियंस लिटरेचर,* 3रा संस्क., संशो. व संपा. फ्रैडरिक डब्ल्यू. डैंकर (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रैस, 2000), 666.

[11]विलकिंस, 172; देखें टालमुड *अबोदाह ज़रह* 18ए। [12]देखें लियोन मौरिस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* पिल्लर कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं, 1992), 696. [13]विलकिंस, 172. यिर्मयाह 19:2 में ''हिनोमियो की तराई'' को जाने वाले ''फाटक जहां ठीकरे फैंक दिए जाते हैं'' का उल्लेख है। [14]कुछ प्राचीन हस्तलेखों में ''यिर्मयाह'' की जगह ''जकर्याह'' है। परन्तु यह लिखा जाना सम्भवतया वचन को

सही करने के प्रयास को दिखाता है। कुछ हस्तलेखों में कोई नाम नहीं है; ''यिर्मयाह'' नाम सम्भवतया किसी प्रकार का विरोधाभास लगने को निकालने के लिए है। (मैज़गर, 55.) [15]इस पेशी के और विस्तार के लिए, देखें यूहन्ना 18:28–19:16. [16]और जानकारी के लिए, *द एंकर बाइबल डिक्शनरी,* संपा. डेविड नोयल फ्रीडमैन (न्यू यार्क: डबलडे, 1992), 5:447–49 में बार्गिल (बर्जिल) पिक्सनर, ''प्रेटोरियम'' देखें। [17]जोसेफस *वार्स* 5.4.2. [18]जोसेफस *एन्टिक्विटीस* 20.8.11. [19]वही, 5.4.3, 4. [20]जोसेफस *वार्स* 2.15.5.

[21]मिशनाह *पेसाहिम* 8.6. [22]विलकिंस, 173. [23]''अब्बा'' की पुष्टि पिता के नाम के रूप में होती है। (टालमुड *बेराकोथ* 18बी।) [24]अरामी भाषा के शब्द अब्बा का अर्थ है ''पिता'' (मरकुस 14:36; रोमियों 8:15; गलातियों 4:6)। [25]आर. टी. फ्रांस, *द गॉस्पल अकॉर्डिंग टू मैथ्यू,* द टिंडेल न्यू टैस्टामैंट कमैंट्रीज़ (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1985), 390. [26]मैज़गर, 56. [27]वे जलते थे क्योंकि यीशु अधिकार के साथ सिखाता और बड़े-बड़े आश्चर्यकर्म करता था। इसके अलावा वह उनके धार्मिक कपट को उजागर करता था (21:23–23:39)। [28]डोनल्ड ए. हैग्नर, *मैथ्यू 14–28,* वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री, अंक 33बी (डलास: वर्ड बुक्स, 1995), 823. [29]*डाइकायोस* (*dikaios*) लूका 23:47 में यीशु की सूबेदार की प्रतिक्रिया में भी मिलता है जहां NASB में इसे ''निर्दोष'' अनुवाद किया गया है। [30]विलकिंस, 173.

[31]फ्रांस, 389. [32]यह विडम्बना ही है कि महासभा ने बाद में प्रेरितों पर उन्हें यीशु की मृत्यु के जवाबदेह होने का अर्थात ''उस व्यक्ति का लहू हमारी गर्दन पर लाना चाहते हो'' का दोष लगाया (प्रेरितों 5:28)। [33]मौरिस, 708. [34]जोसेफस *वार्स* 2.14.9; 5.11.1. [35]*द इंटरनैशनल स्टैंडर्ड बाइबल इन्साइक्लोपीडिया,* संशो. संस्क., संपा. ज्योफ्री डब्ल्यू. ब्रोमिले (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 4:358–59 में डेविड डब्ल्यू. वीड, ''स्कोर्ज।'' अन्य परिस्थितियों में रोमी लोग छड़ियों का इस्तेमाल करते थे (प्रेरितों 16:22, 23; 2 कुरिन्थियों 11:25)। यहूदी लोग विशेष करके चाबुक का इस्तेमाल करते थे, परन्तु वे अपने चाबुकों की गिनती उन्तालीस तक रखते थे (10:17 पर टिप्पणियां देखें)। रोमियों में ऐसी कोई पाबन्दी नहीं थी। [36]जोसेफस *वार्स* 2.21.5; 6.5.3. [37]*डायजेस्ट ऑफ़ जस्टिनियन* 48.19.8.3. [38]बाउर, 936. [39]वही, 1085. [40]वही, 554.

[41]एच. सेंट. जे. हार्ट, ''द क्राउन ऑफ थार्न्स इन जॉन 19, 2–5,'' *जरनल ऑफ थियोलॉजिकल स्टडीज़,* एन. एस. 3 (अप्रैल 1952): 66–75. [42]फ्रांस, 394. [43]स्युटोनियुस *कलिगुला* 32.2; *डोमिशियन* 10.1; डियो केसियुस *रोमन हिस्ट्री* 54.3.7. [44]फिलो *एम्बेसी ऑफ गेयुस* 38. [45]यूसबियुस *इक्लेसिएस्टिकल हिस्ट्री* 2.7.